नयी किताब

दिल्ली : बनती-बिगड़ती तस्वीर

राधेश्याम तिवारी के चयन और संपादन में 'कविता में दिल्ली' संग्रह को साहित्य अकादेमी ने प्रकाशित किया है. संग्रह की 26 पृष्ठों की सारगर्भित भूमिका का शीर्षक 'दिल, दिल्ली और दर्द' है. कुल 96 कवियों की दिल्ली पर कविताओं को इकट्ठा करना सोलह आने मुश्किल भरा काम है. इस संग्रह के तीन खंड हैं- पूर्व, मध्य और उत्तर राग. गालिब नहीं हैं, लेकिन उनकी याद में हाली की लिखी कविता है. जगनिक और जायसी के साथ कुल चार और कवि पूर्वराग में शामिल हैं. मध्य राग में 38 कविताएं हैं, तो उत्तरराग में कुल 50 कविताएं. संग्रह -संपादक का मानना है कि दिल्ली के खंडहर और ऐतिहासिक धरोहर जहां एक ओर अपने अतीत की स्मृतियों को संजोये हुए होते हैं, वहीं इनसे दिल्ली के वर्तमान को बेहतर बनाने की प्रेरणा भी मिलती है. दो दिसंबर, 1859 को एक खत में गालिब अपने दोस्त को लिखते हैं कि दिल्ली की हस्ती मुनहसर कई हंगामों पर थी. किला, चांदनी चौक, हर रोजा बाजार मस्जिद-ए-जामा का, हर हफ्ते सैर यमुना के पुल की, हर साल मेला फूल वालों का! ये पांचों बातें अब नहीं फिर कहो दिल्ली कहां? अब तो दिल्ली और बदल चुकी है. नियोन लाइट्स में डूबा यह शहर दिनभर अपनी शोर से शहर को एक क्षण को भी विश्राम नहीं लेने देता. ऐसे में इस संचयन में अधिकांश हिंदी कविताओं के होने के बावजूद उर्दू की रचनाओं को शामिल करना लाजिम बन पड़ा, क्योंकि इसके बिना दिल्ली के संसार को मुकम्मल पेश करना मुश्किल होता. आजादी के बाद कवियों की उम्मीद सिर्फ जीविका, नौकरी की संभावना भर की नहीं थी, एक बनते महानगर, एक नयी बनती राजधानी के बहाने आधुनिक जीवन की संश्लिष्टताओं को पहचानने की उम्मीद भी थी. संग्रह के कुछ कवि इस उम्मीद पर खरे उतरे हैं. लेकिन यह भी देखने को मिलता है कि राजधानी और महानगर के द्वंद्व में फंसे व्यक्ति का अकेलापन बढ़ता गया है और वह पूरे परिदृश्य से कटा अलग खड़ा नजर आता है. रघुवीर सहाय अपनी कविता में कहते हैं- एक झीना-सा पर्दा था दोनों के बीच/ लोगों के और मौसम के)मैंने उसे हटा दिया/कालातीत समय चारों ओर से घिर आया. वहीं भगवत रावत अपनी लंबी कविता 'कहते हैं कि दिल्ली की है कुछ आबो हवा और' का समाहार इन पंक्तियों से करते हैं- मित्रो इस सबके बावजूद/मैं जो कुछ कह रहा था/दिल्ली के बारे में ही कह रहा था. महज इन तीन पंक्तियों से आप पूरी कविता के मर्म तक पहुंच जाते हैं. आज भी मजीद अहमद की यह कविता पंक्ति 'लाल किला से दूर नहीं थी यमुना/दिखते थे राज के जंगल में नाचते हुए मोर' दिल्ली का एक चित्र खींच लेता है, लेकिन वह स्मृतियों के जंगल में धुंधली याद भर है. कहने को यह कह सकते हैं कि दिल्ली का दिल बहुत बड़ा है, लेकिन इसका दर्द भी कुछ कम नहीं. इस संग्रह की कविताएं मनुष्यों की बुनियादी मानवीय भावनाओं को सिर्फ पुनर्परिभाषित ही नहीं करतीं, बल्कि जीवन-संघर्ष को झेलने का साहस भी देती हैं.

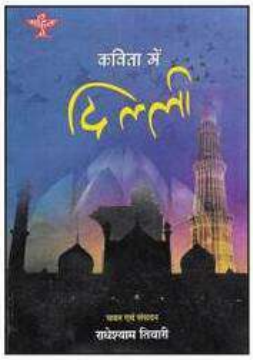

-मनोज मोहन

कविता में दिल्ली / चयन एवं संपादन : राधेश्याम तिवारी / साहित्य अकादेमी / 280

प्रभात खबर
Sunday, March 9, 2025
Ravi Rang
https://epaper.prabhatkhabar.com/clip/67cc80e14453d39c